चित्र - शोभा घारे

कऊआ उदास था

कऊआ उदास था।

उदास। उदास।

कऊआ उदास था।

मुझे यह तो नहीं पता कि वह क्यों उदास था, पर था वह उदास। मैंने उसकी आँखों में एक कातर भाव देखा था। इसमें कोई शक नहीं कि वह उदास था। कभी-कभी उसके चेहरे पर गुस्सा चमकता था, पर फिर जल्दी ही वह फिर उदास हो जाता था। गौरय्या के बच्चे को गिद्ध की निगाह से देखता या उसके अण्डों को तोड़कर सुड़कता, वह उदास बना रहता था। उस वक्त भी जब वह अन्य कऊओं से लड़ता-झगड़ता था या छत की मुँडेर पर काँव-काँव करता था, यह साफ नज़र आता था कि वह उदास था। कभी एक तीर की तरह वह नदी की ओर जाता था। या थोड़ी देर किसी डाल पर शान्त बैठा रहता था। फिर उसी उदास भाव से उड़कर अगले कई घण्टों तक गायब हो जाता था।

चित्र - सिद्धार्थ

देखने को बहुत कुछ था

देखने को बहुत कुछ था।

जैसेः
पेड़,
उसका तना,
उसकी टहनियाँ,
उसके पत्ते
जो हवा में लहराते थे,
फूल जो उस पर आते थे,
पक्षी जो उसी पेड़ पर घोंसले बनाते थे –
उन घोंसलों में छोटे-बड़े, चितकबरे अण्डे जो कुछ ही दिनों में पक्षियों में बदल जाते थे।

देखने को बहुत कुछ था
मेरी कल्पना में।
जैसेः